नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

जहरीली शराब : जवाबदेही भी तय हो

हाल ही में सागर में जहरीली शराब से हुई मौतें एक गंभीर मानवीय त्रासदी हैं. बंडा थाना क्षेत्र के नौरोजा और घुघरा खुर्द गांव में जहरीली शराब के सेवन से अब तक कई लोगों की जान जा चुकी है और बड़ी संख्या में लोग अस्पतालों में उपचार करा रहे हैं. प्रथम दृष्टया शराब में मिथाइल अल्कोहल की मौजूदगी सामने आना इस घटना की भयावहता को और बढ़ाता है. यह केवल अवैध शराब के कारोबार से जुड़ा अपराध नहीं है, बल्कि उन अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर भी गंभीर सवाल खड़े करता है, जिनकी जिम्मेदारी ऐसे कारोबार पर प्रभावी अंकुश लगाने की है.

सबसे बड़ा सवाल यह है कि इन गांवों में अवैध शराब का कारोबार चल कैसे रहा था ? पुलिस और आबकारी विभाग का मैदानी अमला आखिर क्या कर रहा था? अवैध शराब की बिक्री कोई ऐसी गतिविधि नहीं है, जो एक-दो दिन में खड़ी हो जाए. इसके लिए शराब की व्यवस्था, उसका परिवहन और स्थानीय स्तर पर बिक्री का पूरा नेटवर्क काम करता है. यदि यह नेटवर्क लंबे समय से सक्रिय था तो संबंधित अधिकारियों को इसकी जानकारी क्यों नहीं मिली ? और यदि जानकारी मिली थी तो समय रहते कार्रवाई क्यों नहीं की गई ? प्रशासन ने प्रभावित क्षेत्र की छह शराब दुकानों को सील कर सैंपलिंग के निर्देश दिए हैं. यह तत्काल जांच की दृष्टि से उचित कदम है, लेकिन इससे कहीं अधिक जरूरी है कि संबंधित अधिकारियों की भूमिका की भी निष्पक्ष जांच हो. केवल अवैध शराब बनाने और बेचने वालों को पकड़ लेना पर्याप्त नहीं होगा. यह भी पता लगाया जाना चाहिए कि उनकी गतिविधियां अधिकारियों की नजर से कैसे बचती रहीं.

यदि जांच में किसी पुलिस या आबकारी अधिकारी की लापरवाही, कर्तव्य के प्रति उदासीनता अथवा अवैध कारोबारियों से मिलीभगत सामने आती है तो उसके खिलाफ कठोर और त्वरित कार्रवाई होनी चाहिए. ऐसी घटनाओं में केवल तबादला या औपचारिक निलंबन पर्याप्त संदेश नहीं देता. जिम्मेदारी निर्धारित होने के बाद विभागीय कार्रवाई के साथ जरूरत पड़ने पर आपराधिक कार्रवाई भी होनी चाहिए.

इससे यह संदेश जाएगा कि जनता की जान से जुड़े मामलों में लापरवाही को किसी भी स्तर पर स्वीकार नहीं किया जाएगा. मामले में शराब की आपूर्ति उत्तर प्रदेश के ललितपुर से होने की बात सामने आई है. यदि ऐसा है तो जांच को अंतरराज्यीय नेटवर्क तक ले जाना होगा. लेकिन इसके साथ स्थानीय स्तर पर उस नेटवर्क के संपर्कों और संरक्षण की भी पड़ताल जरूरी है. बिना स्थानीय तंत्र की मदद के किसी बाहरी नेटवर्क के लिए गांवों तक जहरीली शराब पहुंचाना आसान नहीं होता. इसलिए जांच केवल सप्लायर और विक्रेता तक सीमित नहीं रहनी चाहिए. फिलहाल सबसे जरूरी है कि प्रभावित गांवों में व्यापक स्क्रीनिंग जारी रहे और संदिग्ध मरीजों को तत्काल उपचार मिले. मृतकों के परिवारों को हरसंभव सहायता और घायलों के उपचार में कोई कमी नहीं होनी चाहिए. साथ ही पुलिस और आबकारी विभाग को पूरे क्षेत्र में अवैध शराब के खिलाफ अभियान चलाना चाहिए.

सागर की घटना ने मैदानी प्रशासन की निगरानी व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर किया है. सरकार ने कठोर कार्रवाई के निर्देश दिए हैं, अब इन निर्देशों को ईमानदारी से लागू करने की जिम्मेदारी संबंधित अधिकारियों की है. जनता को यह भरोसा तभी मिलेगा जब जहरीली शराब बनाने और बेचने वालों के साथ उन अधिकारियों की भी जवाबदेही तय होगी, जिनकी लापरवाही के कारण यह कारोबार लोगों की जिंदगी के लिए खतरा बन गया. ऐसी त्रासदी में दोषियों पर त्वरित कार्रवाई ही भविष्य की घटनाओं को रोकने का सबसे प्रभावी संदेश हो सकती है.

शिक्षक : शिक्षा के कलाकार

जयंत चौधरी

> आज के दौर में जब मशीनें लगभग हर उस काम को करने में सक्षम हो रही हैं जिसका पहले से अनुमान लगाया जा सकता है, तब भी एक कामऐसा है जिसकी जगह कोई नहीं ले सकता - और वह है शिक्षक का काम- एक ऐसा शिक्षक जो एक विद्यार्थी में ऐसी क्षमता देख लेता है जिसे खुद विद्यार्थी अभी नहीं देख पा रहा होता है. इस काम का कोई एल्गोरिदम नहीं है. यह स्कूल की घंटी बजने पर खत्म नहीं होता. और यह देश भर के हर तरह के संस्थान में, हर विषय के हर शिक्षक से जुड़ा है. एक लैटिन कहावत इस तथ्य को सटीक ढंग से रेखांकित करतीहै- नॉन स्कोलाए सेड विताए डिस्सिमस . हम स्कूल के लिए नहीं, बल्कि जिंदगी के लिए सीखते हैं. और इंसानी संभावनाओं का सच्चा कलाकार माना जाने वाला एक शिक्षकही वही व्यक्तिहै, जो इसे संभव बनाता है.

किसी को भी पहली बार पढ़ना सीखने का सटीक दिन याद नहीं होता. लेकिन लगभग हर व्यक्ति उन शिक्षकों को जरूर याद रखता है, जिन्होंने उसे पढ़ाया होता है. भूल जाने वाले पल और कभी न भुलाए जाने वाले व्यक्ति के बीच का यही अंतर हमें शिक्षण कार्य के बारे में कुछ बेहद जरूरी बातें बता जाता है. भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा हर वर्ष प्रदान किए जाने वाले 'राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार' वास्तव में उन चुनिंदा लोगों के प्रति सम्मान होते हैं. हालांकि, कुछ आंकड़े हमें चिंताजनक कहानी भी बताते हैं. ओईसीडी का 2026 का 'टीचर नॉलेज सर्वे' किसी विषय की जानकारी होने और उसे पढ़ा पाने की क्षमता के बीच के अंतर की ओर इशारा करता है. इस सर्वेक्षण के निष्कर्षों से पता चलता है कि विषय का ज्ञान हमेशा कारगर शिक्षण-पद्धति में नहीं बदलता. बात बिल्कुल सरल, लेकिन बेहद जरूरी है- किसी चीज को गहराई से जानना और किसी दूसरे व्यक्ति को उसे सीखने में मदद करना - ये दोनों अलग-अलग कौशल हैं. शिक्षण एक कला है और इसके लिए मानवीय रिश्तों एवं पढ़ाने की समझ के साथ-साथ कक्षा में थोड़ी नाटकीयता भी जरूरी होती है.

यूनेस्को की 'शिक्षकों से संबंधित वैश्विक रिपोर्ट 2024' में इस पेशे की उपेक्षा करने की कीमत को आंकड़ों में दर्शाया गया है. दुनिया को 2030 तक 44 मिलियन अतिरिक्त प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षकों की जरूरत होगी. और, इनमें से आधे से अधिकी जरूरत केवल उन शिक्षकों की जगह लेने के लिए होगी जो नौकरी छोड़ रहे हैं. वहीं, मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीच्यूट का अनुमान है कि स्वचालन के कारण 2030 तक दुनिया भर में 75 मिलियन से 375 मिलियन कामगारों को अपना पेशा बदलना पड़ सकता है. ऐसी परिस्थिति में, योग्य शिक्षकों की अहमियत पहले से कहीं अधिक होगी.

भारत ने इस चुनौती को समय रहते भांप लिया है और इससे पूरी गंभीरता से निपटने की दिशा में कदम उठाए हैं. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के तहत शुरू किए गए चार-वर्षीय 'एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम' में विषयगत निपुणता तथा शिक्षण-पद्धति को एक ही स्नातक कि डिग्री में शामिल किया गया है. इसका उद्देश्य सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को शिक्षण के पेशे की ओर आकर्षित करना है. मैंने भी इस मिशन के लिए एक मेंटर के तौर पर पंजीकरण कराया है. माननीय प्रधानमंत्री हर वर्ष राष्ट्रीय पुरस्कार विजेताओं से न केवल बधाई देने के लिए, बल्कि उनकी बातें सुनने, जमीनी स्तर की उनकी कहानियां जानने और उनसे एक ऐसा दृष्टिकोण साझा करने के लिए भी मिलते हैं जो केवल अनुभवी नेतृत्व से ही प्राप्त हो सकता है.

भारत में 'शिक्षक' किसे माना जाए, इसका दायरा भी बढ़ाया जा रहा है और शायद यह सबसे अनूठा विचार है. 'समाज में सभी के लिए आजीवन सीखने की समझ (उल्लास)' यानी 'न्यू इंडिया लिटरेसी प्रोग्राम'इस सिद्धांत पर आधारित है कि हर साक्षर व्यक्ति एक निरक्षर व्यक्ति को पढ़ा सकता है. इस वर्ष जब हम 'अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस' मना रहे हैं, तो इस कार्यक्रम के तहत नौ राज्यों एवं केन्द्र-शासित प्रदेशों को पूरी तरह साक्षर घोषित किया गया है.

कोई भी कला किसी भी कलाकार में भेद नहीं करती. इसलिए हमारे मन में ऊंच-नीच की जो भी धारणा है, उसे परख कर खत्म करना जरूरी है. भारत की बढ़ती रचनात्मक अर्थव्यवस्था (ऑरेंज इकोनॉमी) के साथ, अनेक कला रूप विद्यार्थियों को आधुनिक दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक के लिए तैयार करेंगे. जैसे-जैसे खेल विश्वविद्यालय आकार ले रहे हैं और राष्ट्रीय खेल अवसंरचना को सुदृढ़ कर रहे हैं, खेल प्रशिक्षक तथा शारीरिक शिक्षा के शिक्षक एक विश्वसनीयकरियर के द्वार खोलेंगे. सटीक मैन्यूफैक्चरिंग सिखा रहे आईटीआई के प्रशिक्षक, ऐसे कौशल विकसित कर रहे हैं जो पुलों के निर्माण और अस्पतालों को सुदृढ़ बनाने में सहायक हैं. यही राष्ट्र निर्माण का एक दूसरा स्वरूप है.

(लेखक केन्द्रीय शिक्षा तथा कौशल विकास और उद्यमशीलता राज्यमंत्री हैं.)

विंध्य की डायरी

वर्षों बाद मुद्दों की राजनीति का दौर

डॉ रवि तिवारी

अपनी राजनैतिक सुझबूझ के कारण प्रदेश में हमेशा चर्चित रहे विंध्य में वर्षों बाद मुद्दों पर राजनीति का दौर अचानक शुरू हो गया है. अपनी रणनीतिक चूको के कारण हाशिए में पहुँच चुके विपक्ष ने एक बार फिर सत्ता की आँखों में आँखे डालकर सवाल पूछना शुरू कर दिया है. विपक्षी दलों में आए इस बदलाव को लेकर चिंतित सत्ता पक्ष अब इसके जबाब में सिस्टम को अपना हथियार बनाने से भी नही चूक रही.जननी कल्पना की मौत के कारणों पर पूरी तरह घिर चुकी विंध्य की लचर स्वास्थ्य सेवाओं में आयुष्मान का लगा ताला अब खुल चुका है. लोग भी यह समझने लगे हैं कि यह खेल अपनो को दूसरे रास्ते से मदद पहुचाने के लिए खेला जा रहा है.

आयुष्मान योजना में अब तक सामने आयी तमाम गड़बडियों की चर्चा के बाद कहानी ऐसे बन्द हो जाती है , जैसे कुछ हुआ ही नही हो. सिरमौर चौराहे पर मौत के बाद लग रहा मजमा इसका भी एहसास करा रहा है कि यदि समय रहते इस लचर व्यवस्था को लेकर प्रयास किया जाता तो दर्जनों असमय हुई मौतों पर विराम लग जाता. भारतीय परम्परा के मुताबिक अभी कोई देर नही हुई है.

अब भी यदि यह लड़ाई किसी निर्णायक स्तर पर जाकर समाप्त होती है तो भी आने वाले समय मे बहुत कुछ ठीक हो सकता है. हालांकि खेमो में बंटी विंध्य की राजनीति अपना रुख कब बदल लेगी इसकी भविष्यवाणी न कोई कर पाया है और न ही कोई कर सकता है.

सेवानिवृत्ति के बाद भी ओएसडी से मोहभंग नहीं

सत्ता के गलियारों में इन दिनों एक सवाल खूब तैर रहा है—आखिर सेवानिवृत्ति के बाद भी मंत्री के ओएसडी से मोहभंग क्यों नहीं हो पा रहा? पिछले सप्ताह ओएसडी अपने मूल विभाग शिक्षा से सेवानिवृत्त हो चुके हैं, लेकिन मंत्री के साथ उनकी सक्रियता को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है. खास बात यह है कि ओएसडी की कार्यप्रणाली को लेकर पहले से ही तरह-तरह की चर्चाएं होती रही हैं और उनका विशेष फोकस पुलिस महकमे से जुड़े मामलों पर रहने की बातें भी अक्सर सुनने को मिलती रही हैं.

मंत्री के जिले के दौरे की सूचना हो या कार्यक्रमों की तैयारी, चर्चा है कि ओएसडी कई बार मंत्री से पहले ही पहुंच जाते हैं और अधिकारियों के मोबाइल पर संदेशों का सिलसिला शुरू हो जाता है. संदेश किस उद्देश्य से होते हैं, किसके लिए होते हैं और उनका असर कितना होता है यह तो संबंधित अधिकारी ही बेहतर बता सकते हैं, लेकिन संदेशों का मतलब निकालने में सियासी गलियारे ज्यादा देर नहीं लगाते. दिलचस्प यह भी है कि आलोचनाओं और चर्चाओं के बावजूद मंत्री और ओएसडी की जुगलबंदी में कोई खास फर्क दिखाई नहीं देता. ओएसडीके कभी-कभी निजी होटल में ठहरने की चर्चा भी सामने आती है इसका मुख्य कारण जिले के मुखिया ओएसडी को ज्यादा भाव नहीं दे रहे हैं जिले के मुखिया को ओएसडी के क्रियाकलापों एवं कुछ बड़े कार्यो में दखलअंदाजी भी चर्चा में रहता है. अब सवाल यही है कि जब मूल विभाग से रिटायरमेंट हो चुका है तो ओएसडी की भूमिका आखिर किस हैसियत से और कितने समय तक जारी रहेगी?

अभद्र टिप्पणी पर एक्शन

रीवा के गांधी मेमोरियल अस्पताल में प्रसूता और नवजात बच्चे की मौत के बाद परिजनों से अभद्रता के मामले में अस्पताल अधीक्षक डॉ. राहुल मिश्रा को पद से हटा दिया गया, शब्दों की मर्यादा भूलना महंगा पड़ गया. अपने स्वभाव से मजबूर डा. मिश्रा ने परिस्थितियों को भापने में चूक कर दी. हर हाथ में मोबाइल होता है उनको भी नही पता था कि समझाइश के समय जो वह बोल रहे है वह कैमरे में कैद हो जाएगा. घटना के बाद मृतका के परिजनों से मुलाकात के दौरान तत्कालीन अधीक्षक डॉ. राहुल मिश्रा का एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें वे परिजनों से बेहद असंवेदनशील और अभद्र भाषा में बात करते नजर आए थे . इसके बाद आक्रोश को हवा मिल गई . बढ़ते आक्रोश और वायरल वीडियो पर संज्ञान लेते हुए स्वास्थ्य विभाग ने यह कार्रवाई की. लेकिन अभी मामला ठंडा नही हुआ है.

डीजे का जोर, बढ़ता जानलेवा शोर

आज के माहौल में इतना शोर-शराबा होने लगा जितना पहले कभी नहीं था. यह बेहद नुकसानदेह है जिस पर सख्ती से नियंत्रण आवश्यक है. शोर अब केवल असुविधा नहीं रह गया है, बल्कि यह हमारे स्वास्थ्य और जीवन के लिए गंभीर खतरा बनता जा रहा है. महानगरों से लेकर छोटे कस्बों तक ध्वनि प्रदूषण की समस्या गंभीर रूप से बढ़ रही है. वाहनों के हॉर्न, डीजे, लाउडस्पीकर और दूसरे ध्वनि विस्तारक यंत्रों की तेज आवाज लोगों के सामान्य जीवन को प्रभावित कर रही है. त्योहारों पर डीजे का चलन काफी बढ़ गया है. लगातार तेज शोर के संपर्क में रहने से उच्च रक्तचाप, अनिद्रा, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन और सुनने की क्षमता पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है. इस खतरे का उदाहरण उत्तर प्रदेश के बरेली में सामने आई घटना से समझा जा सकता है. सड़क पर तेज आवाज में बज रहे डीजे के पास से गुजरते समय 60 वर्षीय एक महिला की तबीयत बिगड़ गई. उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया. घटना की परिस्थितियां यह सवाल जरूर खड़ा करती हैं कि सार्वजनिक स्थानों पर ध्वनि की सीमा और नियमों का पालन कितना जरूरी है. विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भी अलग-अलग परिस्थितियों के लिए शोर की सीमा निर्धारित करने की जरूरत बताई है. डब्ल्यूएचओ के दिशानिर्देशों के अनुसार, घर के भीतर शोर का स्तर करीब 35 डेसिबल और शयनकक्ष में दिन के समय करीब 30 डेसिबल तक रहना बेहतर माना गया है.

स्कूल की कक्षाओं के लिए भी करीब 35 डेसिबल का स्तर सुझाया गया है, जबकि अस्पताल के वार्डों में यह करीब 30 डेसिबल होना चाहिए. खुले आवासीय क्षेत्रों के लिए डब्ल्यूएचओ की तालिका में 50-55 डेसिबल का स्तर दिया गया है. जब स्वास्थ्य और शांतिपूर्ण जीवन के लिए इतनी स्पष्ट सीमाएं बताई गई हैं, तब सड़कों और सार्वजनिक आयोजनों में इनसे कई गुना अधिक आवाज में डीजे बजना चिंता का विषय है. सवाल केवल नियम बनाने का नहीं, बल्कि उन्हें लागू कराने का है. प्रशासन को ध्वनि प्रदूषण की नियमित निगरानी, शिकायतों पर तत्काल कार्रवाई और नियम तोड़ने वालों पर सख्ती सुनिश्चित करनी चाहिए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

राजनीति में निन्यानवे का फेर, दिल्ली जाने में क्यों करते देर

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, राजनीति में हमेशा 99 का फेर बना रहता है. हर नेता अपने 99 के आंकड़े को 100 में बदलने के लिए प्रयत्नशील रहता है.'

हमने कहा, '99 अंक व्यक्ति की साइकोलॉजी से जुड़ा है. कितने ही बल्लेबाज 99 रन बनाने के बाद सेंचुरी बनाते समय नर्वस हो जाते हैं. उन्हें अज्ञात भय सताने लगता है कि कहीं गेंद हिट करने के चक्कर में आउट न हो जाएं. बड़ी मुश्किल से वह 1 रन निकाल पाते हैं. इसे नर्वस 99 कहा जाता है. बाटा के जूते की कीमत 2999.99 रुपए लिखी रहती है. ग्राहक को यह दाम किफायती लगे इसलिए पूरा दाम 3,000 रुपए नहीं लिखा जाता. रेडीमेड ड्रेस के दाम में भी यही खेल किया जाता है.'

पड़ोसी ने कहा, '99 का आंकड़ा व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है. किसी को 99 रुपए दो तो वह खर्च करने की बजाय उसे 100 बनाने की सोचेगा. महाराष्ट्र में पिछले विधानसभा चुनाव के समय बीजेपी ने उम्मीदवारों की जो पहली सूची जारी की थी उसमें 99 नाम थे. आपको

मालूम है कि लोकसभा में कांग्रेस के कुल 99 सदस्य हैं. अब आप हमें यह बताइए कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस 99 के फेर में क्यों फंसे हैं कि 2029 के पहले दिल्ली नहीं जाना चाहते?'

हमने कहा, 'मुंबई मायानगरी है जो भारत की आर्थिक राजधानी है. वहां शेयर मार्केट है और बॉलीवुड भी! यदि दिल्ली को वाशिंगटन डीसी के समान ऐतिहासिक इमारतों वाला शहर माना जाए तो मुंबई भी न्यूयार्क के समान ग्लेमरस है. मुंबई छोड़कर कोई वायु प्रदूषण वाली दिल्ली क्यों जाएगा?'

हमने कहा, 'दिल्ली दिलवालों की है. दिल्ली से दिल लगाने के लिए मोदी और शाह गुजरात से वहां चले आए. नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भी नारा दिया था दिल्ली चलो!'

पड़ोसी ने कहा, 'देवेंद्र फडणवीस मुंबई में खुद को कम्फर्टेबल महसूस करते हैं. आपको याद होगा कि चीन के हमले के समय महाराष्ट्र के प्रथम मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण को तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली बुलाकर रक्षा मंत्री बनाया था. तब कहा गया था कि हिमालय की मदद के लिए सह्याद्रि दौड़ा चला गया. यशवंतराव तो क्या महाराष्ट्र का कोई नेता अब तक प्रधानमंत्री नहीं बन पाया. इसलिए दिल्ली जाने से क्या फायदा? अपने राज्य की हुकूमत ही भली !'

शब्द-सागर 12371

-डॉ. [illegible]

बाएं से दाएं

1. व्याघ्र, शेर 3. विष्णु का वराह रूपी तीसरा अवतार (सं.) 6. गंभीर तथा घोर शब्द करना, तुमुल शब्द करना, बादलों का कड़कना 9. 100 का 25वां भाग, बहुत से, कुछ 10. लहू, खून 11. भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त संख्या 12. पूरब से आने वाली हवा, छोटा गांव 13. हुक्के का दम, फूंक 15. ध्वनि, आवाज, सार्थक ध्वनि 16. बंदर 18. विवाह, शादी 19. फूल लगना, पुष्पित होना, हवा भरने से मोटा हो जाना 21. जल से रहित भूमि, स्थान, जगह 22. पुरुष, पुरुष जाति का 23. बिना पलक गिराए एक ओर देखना, स्थिर दृष्टि

ऊपर से नीचे

1. लगाम 2. आवास, मकान 3. निषिद्ध, वर्जित 4. कपड़ा (सं.) 5. दस सौ, सहस्त्र 7. झुंड, बहुत से जीवों का समूह 8. ईश्वर 9. चलाने वाला (सं.) 11. बोझा ढोने की क्रिया या भाव 14. लज्जाजनक 15. कसम, सौगंध, प्रतिज्ञा 17. फटे कपड़े पर फटे हुए स्थान को तागे की बुनावट से ठीक करना 20. केशलता, बालों का गुच्छा जो नीचे की ओर लटके

Solution 12370

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में राजनैतिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी. नवीन योजनाओं का शुभारम्भ होगा. वर्ष के मध्य मे तीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी. राज्य सम्मान मिलेगा. प्रभाव में वृद्धि होगी. वर्ष के मध्य में सत्ता पक्ष से सुख प्राप्त होगा. वर्ष के अन्त में पारिवारिक चिन्ता से संकट का सामना करना होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को योजना का शुभारम्भ होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अत्याधिक दौड़धूप से सफ्लता मिलेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को स्थाई लाभ का मार्ग प्रशस्त होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को नवीन कार्यो में रूचि रहेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को सामंजस्य बना रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को समय सफ्लतादायक रहेगा. मतभेदों का सामना करना पड़ेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को राजकीय सहयोग प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिये बालक का स्वाभाव श्शांतिप्रिय रहेगा, गंभीर तथा महत्वाकांक्षी होने के कारण शीघ्र ही उन्नति करेगा, बालक हंसमुख, मिलनसार, और दूसरों की सदैव मदद करने वाला होगा, माता का भक्त होगा, जीवन में माता पिता का नाम रोशन करेगा, प्रशासनिक सेवा में जा सकता है.

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 16 संवत् 2083 भाद्रपद कृष्ण एकादशी चन्द्रवासरे दिन 3/56, पुनर्वसु नक्षत्रे शाम 6/15, व्यतिपात योगे प्रात: 7/41 तदुपरि वरीयान रातअंत 4/43, बालव करणे सू.उ. 5/48, सू.अ. 6/12, चन्द्रचार मिथुन दिन 12/40 से कर्क, पर्व- जय एकादशी व्रत, शु.रा. 3,5,6,9,10,1 अ.रा. 4,7,8,11,12,2 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण एकादशी को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से तांबा, पीतल, आदि में तेजी जोरदार होगी, गेहूँ, जौ, चना, उडद, मूँग, मोठ, आदि में समता का योग है, रूई, कपास, सरसों, अरंडी, सींगदाना,, बाजार में सामान्य तेजी होगी, भाग्यांक 9518 है.

मेष- समय के अनुरूप कार्यशैली में बदलाव करना लाभकारी है, विरोधियों से बच कर रहें, नौकरी में तरक्की होगी, महत्वपूर्ण कार्यो के बनने का योग है.

वृषभ- दूसरों के मामले में व्यर्थ का हस्तक्षेप न करें, सेहत का उतार चढ़ाव बना रहेगा, मातृपक्ष से कोई विशिष्ट समाचार मिलेगा, लाभांवित होने का योग है.

मिथुन- नई योजना में सोच समझकर निवेश करें, भावनात्मक संबंधों में मधुरता बढ़ेगी,स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें, व्यर्थ विवाद को टालने का प्रयास करें.

कर्क- आय व्यय में संतुलन बनाये रखें, प्रियजन से मुलाकात यादगार रहेगी, व्यापार में उन्नति होगी, निजी कार्यो में लगनशीलता रहेगी.

सिंह- नए कार्यो के लिये जरूरी धनकी व्यवस्था कर लेंगे, बुजुर्गो के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, आमोद प्रमोद के साधन उपलब्ध रहेंगे, समय पर कार्य पूर्ण होगा.

कन्या- तालमेल की कमी से कामकाज में देरी हो सकती है, पुराना विवाद सुलझने की उम्मीद है, शिक्षा संबंधित कार्यो में लाभ प्राप्त होगा, अनायास दूर की यात्रा होगी.

तुला- मित्रों से किया गया वायदा निभाने में मुश्किल होगी, वैवाहिक चर्चाओं में सफ्लता मिलेगी, उपहार आदि की प्राप्ति होगी, पिता पक्ष से शुभ समाचार मिलेगा.

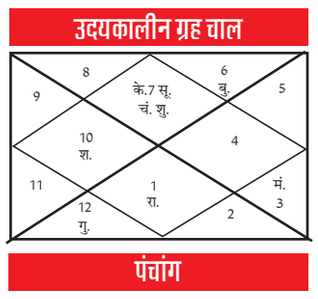

वृश्चिक- कार्यस्थल पर नई चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, आर्थिक यात्रा हो सकती है, भाई बंधुओं को कामकाज में यथेष्ट सहयोग मिलेगा.

धनु- आपका पूरा ध्यान परिवार की जरूरतें पूरा करने की ओर रहेगा, नये व्यापारिक सौदे होंगे, मानसिक संतोष रहेगा, दिनचर्या अनियमित रहेगी.

मकर- प्रियजन के साथ समय बिताकर अच्छा लगेगा, आवश्यकताओं की पूर्ति होगी, सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, प्रिय व्यक्ति से मुलाकात होगी.

कुम्भ- लेनदेन में लापरवाही की तो हानि की संभावना है, कूटनीति से काम लें,परिश्रम की अधिकता रहेगी, अतिथि आगमन हो सकता है.

मीन- नई तकनीक से कारोबार में उन्नति हो सकती है, समाज में मान सम्मान बढ़ेगा, आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी, सामाजिक सेवा कार्यो में यश मिलेगा.

SUDOKU 7503

4	6		3		8	9		7
	1		9		6		5	4
						8		
	4		5				8	
2		5		4		6		1
	3				1		7	
		3						
5	9		7		2		6	
7		6	4		3		9	2

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-डोकू 7502